भारतीय समाज में दलित चेतना का उदय एवं विकास : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्राप्तिः 04.08.2025
स्वीकृतः 10.09.2025

56

डॉ0 शालिनी यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
जुहारी देवी गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, कानपुर
ईमेलः *yadavshalini2011@gmail.com*

सारांश

भारत के संन्दर्भ में दलित चेतना का उदय एंव विकास न केवल इसलिए महत्वपूर्ण है कि 2011 में इनकी सख्या कुल जनसख्या का 16.6 प्रतिशत है, बल्कि इसलिए भी की इसने हमारे लोकतंत्र,राज्य की नीतियो एवं समाज को एक नई दिशा भी प्रदान की है। भारत में दलित चेतना का उदय एव विकास स्वतंत्रता पूर्व ही कई सुधार आन्दोलनों व संगठनो के माध्यम से प्रारंभ हुआ। वास्तविक रूप में दलित चेतना का प्रादुर्भाव ज्योतिबा राव फुले द्वारा सत्यशोघक समाज की स्थापना से हुआ, इसके अलावा प्रार्थना समाज, आर्य समाज, थीओसॉफिकल सोसाएटी की स्थापना, केरल में नंबदरी ब्राहमण के विरोध मे श्री नारायण गुरू के नेतृत्व मे "श्री नारायण धर्म परिपालन सभा" का आयोजन, एंव तमिलनाडु में पेरियार के नेतृत्व मे "आत्म सम्मान आन्दोलन" चला। इन सुधार आन्दोलन एव संगठनो का उद्देश्य दलित आरक्षण की मांग, दलित शिक्षा,सरकारी नौकरी के अधिकार, राजनीति में दलित सदस्यों का चुनाव होगा, निम्न जातियों में आत्मसम्मान की भावना जाग्रत कर दलित चेतना को विकसित करना था। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से भारत में दलित चेतना का उदय एंव विकास का समसामयिक दृष्टिकोण से समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है।

मुख्य बिन्दु

दलित चेतना, आन्दोलन, उत्पीडन, दलित राजनीतिकरण, दलित पहचान, दलित अस्मिता

प्रस्तावना

दलित अगेंजी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है डिप्रेस्ड कास्ट। इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग भारत की निम्न जातियों के लिए किया गया। लगभग 100 वर्ष पहले यह शब्द इस्तेमाल हुआ। जंहा तक चेतना का प्रश्न है यदि समाजशास्त्रीय इतिहास से देखा जाए तो दुर्खीम *द्वारा* सबसे पहलसामूहिक चेतना को प्रयोग में लाया गया। सामूहिक चेतना से अभिप्राय एक प्रकार के समाज से

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.56

है। दलित चेतना का मतलब न केवल उनकी पहचान से है बल्कि उनके समाज से हैं और एक सामूहिक चेतना से अवधारणात्मक रूप में दलित चेतना का अभिप्राय निम्न जातियों की अपने द्वारा रेखांकित की गई पहचान या अस्मिता है। दूसरे शब्दो में दलित चेतना से अभिप्राय ऐतिहासिक रूप से भारत में अछूत माने जाने वाले व्यक्तियों और समुदायों (जिन्हें दलित भी कहा जाता है) में अपने शोषण, उत्पीडन, भेदभाव,अधिकारों, न्याय, समानता, पहचान, आत्मसम्मान व स्वाभिमान के प्रति जागरूक होना है। दलित चेतना दलितों द्वारा अपनी अस्मिता एंव पहचान को बनाये रखने की चेतना है। ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में दलित चेतना की जड़े जाति व्यवस्था आधारित ऊँच नीच एंव भेदभाव में व्याप्त थी। अतः भारत में दलित चेतना का उदय परंपरागत संस्तरण आधारित जाति व्यवस्था एंव ब्राहमणो के वर्चस्व के विरोध में हुआ। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारत में व्याप्त परंपरागत जाति व्यवस्था, ऊँच नीच की भावना व शोषण के विरोध में समाज में दलित चेतना का उदय हुआ। दलित चेतना से दलित समुदायों द्वारा अपनी पहचान व अस्मिता को समाज में एक अलग स्थान देने हेतु सामूहिक प्रसास किए गए। कई वर्षो से समाज का हाशिए पर पड़ा वर्ग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ। इन अधिकारों न केवल शिक्षा, सम्मान समानता, स्वाभिमान के अधिकारों के प्रति जागरूक होना था, बल्कि राजनीतिक अधिकारों एंव राजनैतिक सशक्तिकरण के प्रति भी जागरूक होना था।

इस प्रकार भारत में दलित चेतना का तात्पर्य दलित समुदाय की सामाजिक व राजनीतिक चेतना से है। जिसमें जातिगत आधारित भेदभाव एंव शोषण के प्रति जागरूक होकर दलित समुदाय अपनी पहचान व अस्मिता को बनाए रखने हेतु सामूहिक रूप से प्रयासरत एंव जागरूक होता है। दलित चेतना में उच्च जातियों की सांस्कृतिक विरासत का विरोध भी शामिल होता है (वाल्मीकि 2001) भारत में दलित चेतना के उदय व विकास को स्वतन्त्रता पूर्व व स्वतंत्रता पश्चात समझा जा सकता है।

भारत के संदर्भ में दलित चेतना का उदय, विकास एंव उसकी भूमिका का प्रभाव महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने हमारे लोकतंत्र को, राजकीय नीतियों को व समाज को एक नई दिशा प्रदान की है। दलित चेतना समसामयिक भारतीय समाज की विशेषता है। दलित चेतना को अध्ययन करने के लिए प्रस्तुत शोध पत्र में दलित चेतना के उदय विकास एंव दलित चेतना के प्रभाव का वर्णन किया गया है।

दलित शब्द का इतिहास पुराना है। यह पहले से मौजुद है। इसलिए इसकी पहचान भी पहले से मौजूद है। जैसे शूद्र, अस्पृश्य। यह पहले से समाज का हिस्सा थे। इसलिए उनकी पहचान भी पहले से मौजूद है, यह पहले से ही समाज का हिस्सा थे इसलिए उनकी अपनी चेतना व पहचान भी मौजूद है। उसके रूप अनेक रहें है। जैसे भक्ति काल में रैदास, कबीरदास, रविदास ने समाज में केवल विचारों व कविताओं की रचना ही नही की, बल्कि समाज में नई चेतना की भी चर्चा की। उस समय भी दलित चेतना ने समाज के प्रति अलोचनात्मक प्रहार किया। इन चिंतको ने उच्च जाति के ऊपर सवाल उठाया और समाज में व्यवहार, सोच विचार शैली में परिवर्तन लाने की कोशिश की। इस प्रकार दलित चेतना का आरंभ भक्ति काल मे हुआ। ऐसी सोच नानक सूफी व अकबर मे आई। ‘भक्तिकाल का प्रभाव बहुआयामी था। भक्तिकाल में इस दलित चेतना ने अपने दौर के समाज, नैतिकता, सोच की आलोचना की है। यह हेबरमास के अलोचनात्मक सिद्धांत की तरह है, क्योंकि

इसने अपने समाज की सोच व विचारधारा की अलोचना की। कुछ का मानना है कि, दलित चेतना बुद्ध से आई और कुछ लोग बाल्मीकि से दलित चेतना का प्रादुर्भाव मानते है। ये सब दलित चेतना का प्रागैतिहासिक या प्रारम्भिक काल है।

स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश शासन के दौरान दलित चेतना

भारत में स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश शासन में कई सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक परिवर्तन हुए और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का आगमन हुआ, जिसमे समाज में सभी वर्गो के समान अधिकारों पर बल दिया गया। आधुनिक शिक्षा ने लोगों को ना केवल एक नए दृष्टिकोण से परिचित कराया, बल्कि दलित समाज भी अपने ऊपर होने वाले शोषण, उत्पीडन एंव अपने सामाजिक व राजनैतिक अधिकारों के प्रति जागरूक भी हुआ। भारत में कई वर्षो तक दलितों को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक उत्पीडन का सामना करना पडा। भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन ना केवल भारत को ब्रिटिश राज से मुक्ति का आन्दोलन था। बल्कि यह आन्दोलन दलितो के लिए उनके शोषण व उत्पीडन से मुक्ति का आन्दोलन भी था। ब्रिटिश काल में कई सुधार आन्दोलनों का जन्म भी हुआ, जो कि दलित चेतना के उदय हेतु प्रभावी साबित हुए। साथ ही अंग्रेजो द्वारा लाई गई आधुनिक शिक्षा ने दलितों को समानता, न्याय, आत्म सम्मान के मूल्यों से परिचित कराया।

भारत में यदि दलित आन्दोलनों की बात की जाए तो यह कहा जा सकता है कि 19 वीं शताब्दी का काल दलित आन्दोलन के प्रारंभ का काल था। क्योकि इस काल में ही ज्योतिबा राव फूले, राजा राम मोहन राय, सावित्री राव फूले, श्री गुरू नारायण, एंव बी आर अम्बेडकर इत्यादि समाज सुधारको ने दलितों के लिए कई सुधार आन्दोलनों एंव संगठनों का गठन किया। ज्योतिबा राव फूले ने महाराष्ट्र में अस्पृश्यता व पंरपरागत जाति व्यवस्था में व्याप्त छुआछूत, व भेदभाव का विरोध किया एंव शेषित महिलाओं व दलितो को शिक्षित करने का प्रयास किया। इन्होने महाराष्ट्र में दलितों को डत्पीड़न से मुक्ति हेतु एंव उनको समान सामाजिक धार्मिक अधिकारों को दिलाने हेतु सत्यशोधक समाज का गठन किया। साथ ही उनकी पत्नी सावित्री राव फुले ने महिलाओं को शिक्षित करने हेतु कई प्रयास किए।

श्री नारायण गुरू ने केरल में जाति आधारित उत्पीडन एंव भेदभाव के विरोध में दलित आन्दोलन शुरू किया। उन्होनें अपने आन्दोलन में "सभी मनुष्यों के लिए एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर" का उद्धरण दिया। इन्होनें केरल के एझावा समुदाय में व्याप्त जाति व्यवस्था आधारित भेदभाव को खत्म करने हेतु सामाजिक व धार्मिक सुधार के लिए श्री नारायण धर्म परिपालन योगम का गठन किया जोकि मुख्यता एझावा समुदाय के उत्थान हेतु उनकी शिक्षा, सामाजिक समानता, एंव आत्मसम्मान के लिए कार्यरत है। ई. वी. रामासामी नायकर (पेरियार) द्वारा 1925 में तमिलनाडु में आत्मा सम्मान आन्दोलन का नेतृत्व किया गया। यह आंन्दोलन जाति व्यवस्था द्वारा शोषित निम्न जातियों के आत्म सम्मान एंव सामाजिक समानता हेतु किया गया। यह आंन्दोलन ब्राहमण विरोधी एंव जाति विरोधी प्रकृति का था। (आत्म सम्मान आन्दोलन विकिपीडिया, 2025)।

दलित चेतना को नया मोड़ डॉ भीम राव अम्बेडकर ने प्रदान किया। एलेनोर जेलियट (1992) ने अम्बेडकर द्वारा संचालित दलित आन्दोलन, दलित पहचान और चेतना के निर्माण में

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.56

अंबेडकर के योगदान का वर्णन किया है। अंबेडकर ने विदेश से शिक्षा प्राप्त कर दलितों के उत्थान हेतु कई समाज सुधारक आन्दोलन और संगठन स्थापित किए। ब्रिटिश काल में महाड़ आन्दोलन (1927),कालाराम मंदिर प्रवेश आन्दोलन (1930), पूना पैक्ट आन्दोलन (1932),ने दलित चेतना का विकसित किया। भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के साथ–साथ डॉ भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के मुद्दों को लगातार उठाया उन्होनें बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1924), इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी (1936), एंव शेडयूल्ड कास्ट फेडरेशन की स्थापना की, जिससे दलितों का राजनैतिक परियोजन प्रारंभ हुआ। गेल ओमवेट ने अपने अध्ययन में जाति, सामाजिक आन्दोलनों और अम्बेडकरवादी दर्शन का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है (ओमवेट,1994)।

इस प्रकार स्वतंत्रता पूर्व दलित चेतना की प्रकृति दलितों के सामाजिक, धार्मिक एंव राजनैतिक जागरूकता से संबंधित थी। जिसमे दलितों को सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश, मंदिरो में प्रवेश, शिक्षा, राजनीति, आर्थिक गतिविधियों से संबंधित अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया एंव इन क्षेत्रों में दलित सहभागिता को बढ़ावा भी दिया गया।

स्वतंत्रता पश्चात् दलित चेतना का विकास

भारत में आजादी से पहले दलित मोबाइलाइजेशन सीमित था। कांग्रेस की तरफ था। आजादी के बाद दलित चेतना का विस्तार हुआ वो केवल पश्चिम व दक्षिण की तरफ नहीं थी बल्कि उत्तर व पूर्व में भी दलित चेतना का विस्तार हुआ। यदि स्वतंत्रता पूर्व दलित चेतना केंद्रित थी तो स्वतंत्रता के पश्चात दलित चेतना विस्तृत हुई। दलित चेतना बाद में राजनैतिक दल के रूप सामने आई।

यघपि स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश नीतियो, आधुनिक शिक्षा पद्धति, धार्मिक एंव सामाजिक सुधार आंन्दोलन के कारण दलितों में अपने अधिकारों के लिए सजगता आई, उनमें दलित चेतना कर उदय हुआ, तो वही स्वतंत्रता पश्चात् दलितों में अपने अधिकारों के प्रति सक्रियता दिखी। वर्तमान में दलित न केवल अपने हीतो के प्रति जागरूक है बल्कि अपने हितों के लिए विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों में सामूहिक एकजुटता एंव सहभागिता भी करते है। इस सन्दर्भ मे यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता पश्चात् दलितों में दलित चेतना का विकास हुआ है।

भारत को स्वतंत्रता 1947 में ही प्राप्त हो गई थी लेकिन वास्तव में दलितों को स्वतंत्रता भारतीय संविधान के लागू होने पर प्राप्त हुई। स्वतंन्त्र भारत में दलित चेतना का एक नया रूप विकसित हुआ। क्योंकि वैंधानिक रूप से भेदभाव एंव छुआ छूत की भावना को मिटाने हेतु भारतीय संविधान में प्रावधान किए गए। भारतीय संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर ने समानता, स्वतंत्रता एंव न्याय के सिद्धान्तों को भारतीय संविधान में शामिल किया, और दलित चेतना को एक वैधानिक रूप प्रदान किया। दलितों के अधिकारों की पहले जैसे अनदेखी न किया जा सके, उनपर वर्षो से हो रहे अत्याचार को दोबारा दोहराया न जा सके, इसलिए कड़े प्रावधान एंव नियम बने। अम्बेडकर द्वारा भारतीय संविधान के अंतगर्त अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को गैरकानूनी घोषित किया गया। जिससे दलितों को समाज की मुख्यधारा मे जोड़ने में सहायता मिली। साथ ही साथ दलितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु आरक्षण की व्यवस्था की गई। दलितों को शिक्षा, रोजगार, राजनीति, में समाज के अन्य वर्गो की भांति समान प्रतिनितित्व हो इसलिए आरक्षण व्यवस्था का प्रावधान भी संविध

ाान में डॉ भीमराव अम्बेडकर द्वारा किया गया। डॉ भीमराव अम्बेडकर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित चिंतन और राजनीतिक चेतना की नींव डालने का प्रयास भी किया है (अम्बेडकर,1936;1948) स्वंतत्रता पश्चात् दलित चेतना काप्रोत्साहित करने हेतु कई संगठनों का निर्माण भी हुआ। जो राजनैतिक एंव गैर राजनैतिक दोनों प्रकृति के थे। स्वंतत्रता पश्चात् दलित चेतना दलित आन्दोलनों एंव राजनैतिक संगठनो के रूप में सामने आई।

दलित चेतना का राजनीतिकरण

भारत में स्वंतत्रता पश्चात् राजनीति में दलित प्रतिनिधित्व स्थापित करने हेतु कुछ राजनैतिक दल स्थापित हुए जोकि दलित चेतना एंव दलित लामबंदी के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए। कांशीराम एंव मायावती ने बहुजन समाज पार्टी द्वारा दलितों को राजनीति में एक नई पहचान दिलाई। रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया का निर्माण हुआ जोकि अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित पार्टी थी, और दलित अधिकारों एंव दलित सशक्तिकरण के लिए प्रयासरत है। 1972 में महाराष्ट्र में दलित पैंथर संगठन की स्थापना हुई। यह संगठन एक सामाजिक राजनीतिक संगठन था जो कि दलितों कें उत्थान हेतु बनाया गया था। और दलित अधिकारों को लेकर संघर्षरत था। इसी प्रकार 1949 में अन्ना दुरई के नेतृत्व में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डी॰एम॰के) दल का निर्माण हुआ। हालांकि द हिन्दू (25 अक्टूबर 2023) के अनुसार "भारत में दलित राजनीति विभिन्न स्वंतत्र दलित राजनीतिक दलों के उदय के साथ विकसित हुई है, जैसे रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI), बहुजन समाज पार्टी (BSP) अन्य राजनीति दल जैसे विदुथलाई चिरूथैगल काची (VCK), तमिलनाडु में पुथिया तमिलगम (PT),और आंध्र प्रदेश और आसपास के राज्यों में प्रजा राज्यम पार्टी (PRP)। इनमें से अधिकांश राजनीतिक दल प्रत्येक बीतते दिन के साथ धीरे–धीरे कमजोर होते जा रहे हैं, जो उनके राजनीतिक कार्यो में झलकता है।

निष्कर्ष

भारत में आजादी पूर्व दलित चेतना का प्रादुर्भाव सामाजिक, प्रशासनिक अधिकार संबंधी, विशिष्ट पहचान संबंधी रूढ़िवादी हिंदू धर्म व जाति के विरोध में एवं पारस्परिक धार्मिक एवं जातिगत वैचारिकी में सुधार संबंधी तथा दक्षिण एवं पश्चिम भारत तक ही सीमित था। जबकि स्वंतत्रता पश्चात दलित चेतना का विस्तार उत्तर एवं पूर्वी भारत में भी हुआ तथा कई राजनीतिक दल बने जैसे अम्बेडकर द्वारा रिपब्लिकन पार्टी का गठन हुआ। अन्ना दुरई ने द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK) दंल तथा कांशीराम के नेतृत्व में बहुजन समाज पार्टी (बी॰एस॰पी) का निर्माण हुआ। साथ ही दलित दृष्टि, दलित विमर्श, एवं दलित साहित्य जैसे विचार आए और शक्तिशाली दलित मध्य वर्ग का भी उदय हुआ। समसामयिक भारतीय समाज में दलित एक आत्मनिर्भर समूह के रूप में उभरा है और अपने अधिकारों व विकास के लिए सतत अग्रसर है। इस प्रकार दलित चेतना के सामाजिक, वैचारिक और राजनीतिक उदय एवं विकास के बाद संभावित है कि दलित चेतना बौ्द्धिक विकास की तरफ बढ़े।

संदर्भ

1. Ambedkar, B. R. (1936). Annihilation of caste. Navayana Publishing (2014 edition with introduction by Arundhati Roy).

2. Ambedkar, B. R. (1948). The untouchables: Who were they and why they became untouchables. Government of India.
3. Omvedt, G. (1994). Dalits and the democratic revolution: Dr. Ambedkar and the Dalit movement in colonial India. New Delhi: Sage Publications.
4. Zelliot, E. (1992). From untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar movement. Manohar Publishers.
5. Valmiki,Omprakash.(2001) Dalit Sahitya Ka Saundarya Shastra. Delhi, Radhakrishna Prakashan.
6. Retrieved from- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Narayana_Guru
7. Retrieved from- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Self-Respect_Movement
8. Retrieved from- https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/the-present-and-future-of-dalit-politics/article67454822.ece
9. Retrieved from- https://en.m.wikipedia.org/wiki/Dravida_Munnetra_Kazhagam